शब्द विचार

शब्द

जिस तरह सब्जी पकाने के लिए घी/तेल, नमक, मिर्च, धनिया, हल्दी, टमाटर, पानी व खाद्य (खाने का) पदार्थ जैसे - आलू व कोई भी सब्जी की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार विचार-विनिमय के लिए भाषा की आवश्यकता होती है, उस भाषा का निर्माण शब्दों से होता है। यदि शब्द न हो तो भाषा का कोई अस्तित्व नहीं होता है।

बोलते समय हमारे मुँह से ध्वनियाँ निकलती है। वह प्रत्येक ध्वनि एक वर्ण को इंगित करती है। इन सब ध्वनियों से मिलकर शब्द बनते हैं और इन्हीं वर्णों का समूह, शब्द कहलाता है। शब्द में प्रत्येक वर्ण का एक निश्चित स्थान होता है यदि निश्चित स्थान पर वर्णों को न रखा जाए तो उन्हें शब्दों का नाम नहीं दिया जा सकता। उसके लिए इसे उचित स्थान पर रखा जाना बहुत आवश्यक है;

जैसे - **नवप** शब्द लिखा जाए तो इससे किसी सही शब्द का निर्माण नहीं होगा। परन्तु अब इसमें फेरबदल कर दिया जाए तो यह **पवन** शब्द बनाता है। इसी तरह से अन्य सभी शब्दों का निर्माण होता है। इसलिए हम कह सकते है एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि, शब्द कहलाता है।

वर्णों का सार्थक समूह ही शब्द कहलाता है।

उदाहरण -

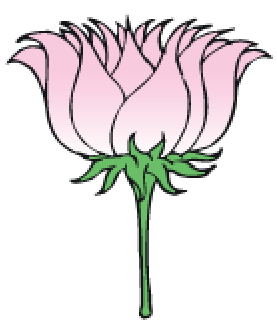	क् + अ + म् + अ + ल् + अ = कमल

कमल - फूल का नाम

शब्द और पद

वर्णों के द्वारा शब्दों का निर्माण होता है। हर शब्द का अपना एक अर्थ होता है। जब हम इन सभी शब्दों को आपस में जोड़कर लिखते हैं, तो इसे वाक्य कहा जाता है। इसमें हम व्याकरण सम्बन्धी सभी नियमों का ध्यान रखते हैं। अपने मनोभावों व विचारों को दूसरों को व्यक्त करने के लिए शब्दों को वाक्यों में एक सही

जगह पर रखते हैं, जिससे हम सही तरह से अपने मत को व्यक्त कर सकें। यदि हम इन शब्दों को वाक्यों में सही स्थान पर नहीं रख पाते तो पूरा वाक्य एक गलत अर्थ को दर्शाएगा जो स्थिति को गंभीर या हास्यासपद बना सकता है; जैसे -

(1) इस नहा से साबुन लो।

इस साबुन से नहा लो।

(2) राम स्कूल देने परीक्षा गया है।

राम परीक्षा देने स्कूल गया है।

यहाँ शब्दों का स्थान बदल जाने पर कोई सार्थक अर्थ नहीं निकल पाया जिससे कोई लाभ नहीं होता और स्थिति गंभीर हो जाती है या हास्यापद बन जाती है। पर जब हम व्याकरण के नियमों का प्रयोग कर वाक्य निर्माण करते हैं तो वह पद कहलाते हैं।

शब्दों का वर्गीकरण - शब्दों की उत्पत्ति

शब्दों का वर्गीकरण

इस विश्व में हज़ारों भाषाएँ बोली जाती हैं। अकेले भारत में ही अनगिनत भाषाएँ हैं। हर भाषा के अंदर हज़ारों शब्द होते हैं। यहीं शब्द एक भाषा को समृद्ध बनाते हैं। इन शब्दों की उत्पत्ति कैसे हुई, इनका निर्माण कैसे हुआ, इन शब्दों के क्या-कया अर्थ है, इनमें कोई परिवर्तन संभव हो सकता है या नहीं इत्यादि। इन सभी आधार पर हम शब्दों का वर्गीकरण करते हैं जो इस प्रकार है -

(क) शब्दों की उत्पत्ति

(ख) रचना (व्युत्पत्ति) के आधार पर

(ग) प्रयोग के आधार पर

(घ) विकार के आधार पर शब्द भेद

(ङ) अर्थ के आधार पर शब्द भेद

(क) शब्दों की उत्पत्ति :-

हिंदी शब्द भंडार में अनेको बाहरी भाषाओं के शब्दों का समावेश है। ये शब्द कैसे आए? इसको जानने के लिए हमें इसकी उत्पत्ति को जानना आवश्यक है। इसकी उत्पत्ति को जानने के लिए चार स्रोत माने गए हैं, जो इस प्रकार हैं -

(1) तत्सम शब्द

(2) तद्भव शब्द

(3) देशज शब्द

(4) विदेशी शब्द

(1) <u>तत्सम शब्द</u> :- तत्सम का अर्थ है तत् (उस) + सम (समान) उस संस्कृत के समान। तत्सम शब्द, वे शब्द कहलाते हैं जो संस्कृत भाषा से लिए गए है व बिना किसा बदलाव के हिंदी भाषा में प्रयुक्त किए जा रहे हैं; जैसे - सूर्य, मस्तिष्क, अग्नि, नृत्य आदि।

(2) <u>तद्भव शब्द</u> :- तद्भव का अर्थ है 'तत्' (उससे) + 'भव' (पैदा हुए) अर्थात् उस संस्कृत से पैदा हुए शब्द। वे शब्द जो संस्कृत भाषा के शब्द से विकसित (पैदा हुए) हुए है, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे -

(1) कुकूर से <u>कुत्ता</u>

(2) कपोत से <u>कबूतर</u>

(3) सर्प से <u>साँप</u>

(4) अग्नि से <u>आग</u>

(5) क्षेत्र से <u>खेत</u>

अन्य तत्सम व तद्भव शब्द -

तत्सम	तद्भव
अंध	अंधा
अश्रु	आँसू
गृह	घर

नासिका	नाक
स्वर	सुर
भिक्षा	भीख
नग्न	नंगा
मुख	मुँह
दंत	दाँत
उच्च	ऊँचा
दुग्ध	दूध
वानर	बंदर
सत्य	सच
सप्त	सात

अग्नि	आग
प्रहर	पहर
अंधकार	अँधेरा

(3) <u>देशज</u> - देशज का अर्थ है - देश + ज अर्थात् देश में जन्म लेने वाले। जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, वे देशज कहलाते हैं; जैसे - गाड़ी, थैला, पगड़ी, खटखटाना आदि।

(4) <u>विदेशी या विदेशज</u> - भारत के इतिहास में विदेशी देशों का बड़ा साथ रहा है। कभी व्यापार की दृष्टि से तो कभी शासन की दृष्टि से हम सदा विदेशियों के संपर्क में बने रहे, उनकी भाषा के बहुत से शब्द स्वत: ही हिंदी भाषा में सम्मिलित (मिल) हो गए व आज वे प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी या विदेशज शब्द कहलाए। हमारी भाषा में अंग्रेज़ी, उर्दू, फ्रांसीसी, फ़ारसी, अरबी, चीनी आदि भाषाओं के अनेक शब्द मिल गए हैं;

जैसे - चेन, कार, साइकिल, शाबाश, तमाशा, कंप्यूटर, टेलीफ़ोन, तारीख़, लायक, वकील, हवा, शादी, मिनिस्टर, सिनेमा, चाय, कूली, चाकू आदि।

रचना के आधार पर

रचना के आधार पर

वर्णों से मिलकर ही शब्दों का निर्माण होता है। वर्णों के मेल के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित तीन भेद कहे गए हैं -

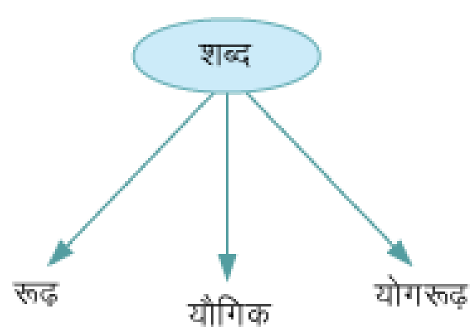

- <u>**रुढ़:-**</u>

  कुछ शब्द होते हैं, जिनके खंड करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता है या जो अन्य शब्दों के योग से नहीं बनते परन्तु फिर भी किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, वे रुढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे -

  कल = क, ल

  पर = प, र

  कमल = क, म, ल

  इनमें क, ल/प, र/क, म, ल के टुकड़ें करने पर, उनका कुछ अर्थ नहीं निकलता है, अत: ये शब्द निरर्थक हैं।

  <u>**परिभाषा:-**</u>

  ऐसे शब्द जो किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं परंतु उनके टुकड़ों का कोई अर्थ नहीं निकलता, उन्हें रुढ़ शब्द कहा जाता है।

- **यौगिक :-**

  जो शब्द कई सार्थक शब्दों के मिलने (योग) से बने हो, वे यौगिक कहलाते हैं; जैसे -

  (1) हिमालय = हिम + आलय (बर्फ का घर)

  (2) देवदूत = देव + दूत (देवों का दूत)

  (3) विद्यालय = विद्या + आलय (विद्या का मंदिर/घर)

  (4) छात्रावास = छात्र + आवास (छात्रों के रहने का स्थान/आवास)

  ये सभी शब्द दो सार्थक शब्दों, जिनका अपना विशेष अर्थ हो, के मेल से बने हैं।

- **योगरुढ़ शब्द :-**

  योगरुढ़ शब्द का अर्थ = योग + रुढ़ अर्थात् जो शब्द यौगिक शब्द व रुढ़ शब्दों के समावेश (मिलने) से बना हो, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। इसमें यौगिक व रुढ़ दोनों शब्दों की विशेषताएँ होती हैं; अर्थात् यौगिक शब्दों की भाँति उनके सार्थक खंड किए जा सकते हैं। रुढ़ शब्दों के समान इनका एक विशेष प्रचलित अर्थ होता है; जैसे -

  (1) दशानन - दश (दस) + आनन (मुख) दस मुखों वाला रावण

(2) पकंज - पंक (कीचड़) + ज कीजड़ में रहने वाला

उपर्युक्त शब्द दशानन अब रावण के अर्थ में प्रसिद्ध हो गया है। उसी तरह पकंज अब कमल के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

जिस तरह से एक भवन निर्माण के लिए बहुत सारी सामग्री व लोगों की सहायता पड़ती है; जैसे - लोहा, ईंट, गारा, रेती, सीमेंट, इंजीनियर, मज़दूर इत्यादि। उसी प्रकार एक वाक्य का निर्माण अनेको शब्दों के प्रयोग से बनता है। इस वाक्य में प्रयोग में लाए गए हर शब्द का अपना अलग-अलग महत्व होता है व अपना अलग कार्य होता है। इसी प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ निम्नलिखित भेद माने गए हैं -

(1) संज्ञा

(2) सर्वनाम

(3) विशेषण

(4) क्रिया

(5) क्रिया-विशेषण

(6) संबंधबोधक

(7) समुच्चयबोधक

(8) विस्मयादिबोधक

विकार के आधार पर

विकार के आधार पर शब्द भेद

विकार के आधार पर इसे दो भागों में बाँटा जाता है -

1. **विकारी** - जिन शब्दों के रुपों में परिवर्तन होता रहता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्दों के अन्तर्गत आते हैं।

2. **<u>अविकारी</u>** - जिन शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। क्रिया-विशेषण, संबधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक आदि अविकारी शब्द है; जैसे -

1. राधा बहुत सुंदर चित्र बनाती है।

2. रोहन बहुत सुंदर चित्र बनाता है।

3. दोनों बहुत सुंदर चित्र बनाते हैं।

यहाँ **'बहुत सुंदर'** शब्द क्रिया विशेषण है, जिनमें लिंग के बदलने के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। अत: ये अविकारी शब्द है।

इस चार्ट के द्वारा विकार के आधार पर इसके सभी भेदों को समझा जा सकता है।

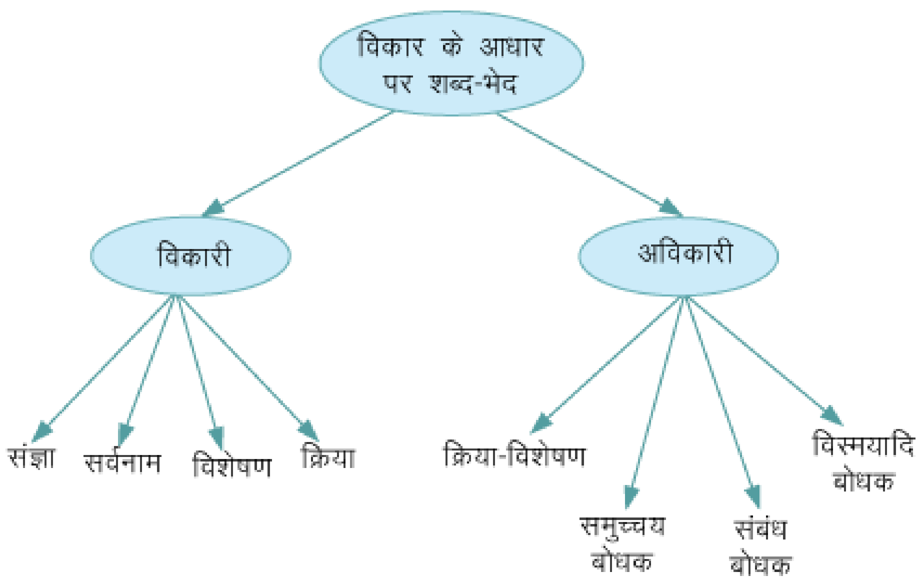

अर्थ के आधार पर

<u>अर्थ के आधार पर शब्द-भेद</u>

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद होते हैं -

(1) सार्थक :- जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ हो, वे शब्द सार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे - रोटी, पानी आदि।

(2) निरर्थक :- जिन शब्द का कोई अर्थ नहीं होता है, वे शब्द निरर्थक शब्द कहलाते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप से कोई कार्यालय में मिलने व अपने काम के विषय में मिलने आता है और आपसे पूछता है - आपका <u>हाल-वाल</u> कैसा है, मेरा <u>काम-वाम</u> हुआ कि नहीं?

तो उस व्यक्ति के द्वारा पूछे गए शब्दों में हाल-वाल व काम-वाम का प्रयोग हुआ है। यहाँ हाल (तबीयत आदि से है) का अर्थ स्पष्ट है तथा काम (कार्य) का अर्थ स्पष्ट है परन्तु वाल व वाम का कोई अर्थ नहीं है, ऐसे शब्द निरर्थक शब्द होते हैं।

• **सार्थक शब्दों का वर्गीकरण:-**

एकार्थी शब्द :- जिन शब्दों के अर्थ बदलते नहीं है, एकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे - सूरज शब्द का एक ही अर्थ है – सूर्य।

अनेकार्थी शब्द :- अनेकार्थी शब्द वे होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। इनके अर्थ अलग-अलग परिस्थितियों में अर्थ देते हैं; जैसे – तीर = तीर (नदी का किनारा), बाण।

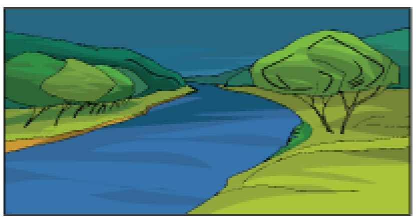

अन्य शब्द इस प्रकार हैं -

1. फल - फल (परिणाम), फल (सेब, केला, आम इत्यादि)

2. कर - हाथ, किरण, हाथी की सूँड, टैक्स

3. मुद्रा - चेहरे के भाव, अगूँठी, सिक्का, मोहर

4. अलि - भौंरा, सखी, कोयल

5. उत्तर - दिशा, पीछे, जवाब

6. पत्र - चिट्ठी, पत्ता

7. पट - पर्दा, दरवाज़ा, वस्त्र

पर्यायवाची शब्द:-

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते है, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

याद रखने योग्य -

अर्थ की दृष्टि में समानता होने के कारण भी यह पर्यायवाची शब्द प्रयोग में एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते।

<u>पर्यायवाची शब्द</u>:-

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से समान अर्थ के होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

परन्तु यह याद रखना आवश्यक है कि अर्थ में समानता होने के कारण भी यह पर्यायवाची शब्द प्रयोग में एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते।

जैसे - 'क्षीर' विष्णु जी का निवास स्थान है, वह क्षीर सागर में रहते हैं। परन्तु क्षीर के स्थान पर हम दूध नहीं लिख सकते जबकि दोनों पर्यायवाची शब्द है। हर पर्यायवाची शब्द अपने अर्थ से विशिष्टता लिए हुए होता है; उदाहरण के लिए -

1.	जल	पानी, नीर, अंबु, पय
2.	दूध	दुग्ध, गोरस, क्षीर
3.	अंधकार	तिमिर, तम, अँधेरा
4.	आँख	नेत्र, लोचन, चक्षु, नयन
5.	ईश्वर	भगवान, परमात्मा, परमेश्वर
6.	वन	जंगल, अरण्य, कानन

7.	बालक	लड़का, बच्चा, शिशु, बाल
8.	माता	माँ, जननी, धात्री
9.	स्त्री	औरत, महिला, नारी
10.	अमृत	पीयूष, सुधा, सोम, अमिय
11.	पत्नी	भार्या, दारा, वामा, अर्धांगिनी
12.	पेड़	वृक्ष, पादप, विटप, द्रुम
13.	सोना	स्वर्ण, कनक, कंचन, सुवर्ण
14.	सूर्य	सूरज, रवि, दिनकर, प्रभाकर
15.	चन्द्र	चाँद, चन्द्रमा, राकेश, रजनीश
16.	समूह	टोली, गण, दल, झुंड
17.	शत्रु	दुश्मन, बैरी, रिपु

18.	बंदर	वानर, कपि, मर्कट, हरि
19.	हाथ	कर, हस्त, पाणि
20.	साँप	सर्प, विषधर, भुजंग, व्याल
21.	पुत्री	बेटी, कन्या, लड़की, बाला
22.	पुष्प	बेटी, कन्या, लड़की, बाला
23.	मृत्यु	निधन, देहावसान, मौत, शरीरान्त
24.	सेवक	नौकर, चाकर, दास
25.	संसार	जगत, विश्व, दुनिया, भव
26.	कुसुम	फूल, पुष्प, सुमन

विलोम शब्द:-

किसी शब्द से विपरीत अर्थ देने वाले शब्द, उसके विलोम शब्द कहलाते है; उदाहरण के लिए -

(1) खेल में हार व जीत संभव है।

(2) शीला कभी दूर जाकर खेलती है तो कभी पास आकर।

नीचें कुछ विलोम शब्द दिए जा रहे हैं -

शब्द	**विलोम**
देशी	विदेशी
योग्य	अयोग्य
स्त्री	पुरूष
अच्छा	बुरा
दिन	रात
राजा	रंक
कठोर	कोमल
औपचारिक	अनौपचारिक
मूर्ख	चतुर
सम्मान	अपमान

विख्यात	कुख्यात
नियमित	अनियमित
अनुकूल	प्रतिकूल
सुगंध	दुर्गंध
ठोस	द्रव्य
स्थायी	अस्थायी
खूबसूरत	बदसूरत
सत्य	असत्य
सजीव	निर्जीव
आदि	अनादि
अनुज	ज्येष्ठ

जय	पराजय
स्वाधीन	पराधीन
हिंसा	अहिंसा
दयालु	निर्दय
पुरस्कार	दंड
गुण	अवगुण
गरीब	अमीर
एक	अनेक
एकता	अनेकता
नवीन	प्राचीन
उदय	अस्त

आशा	निराशा
अभिमान	नम्रता
धनी	निर्धन
गुप्त	प्रकट
निकट	दूर

भिन्नार्थक शब्दः-

कुछ शब्द उच्चारण (बोलने) की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं परन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें भिन्नता होती है, उन्हें भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है; जैसे -

शंभू के पिता की मृत्यु पर हम शोक प्रकट करने गए।

हमें चाऊमीन खाने का बहुत शौक है।

यहाँ पर शोक, व शौक शब्दों का प्रयोग हुआ है। जहाँ एक शोक का अर्थ दुख व दूसरे शौक का अर्थ-रुचि से है।

अन्य उदाहरण

1	कोर - आँख का किनारा	आँख की कोर में देख कुछ गिर गया है।
	कौर - गस्सा (रोटी का टुकड़ा)	एक कौर रोटी का खा लो।

2	बेल - लता	ये बेल पूरे घर पर छा गई है।
	बैल - पशु	बैल बहुत मेहनती पशु होता है।
3	समान - जैसा	तुम राम के समान आचरण वाले हो।
	सामान - वस्तुएँ	तुम्हारा सामान बस में छूट गया।
4	में - अंदर	घर में राघव बैठा है।
	मैं - अपने लिए	मैं राघव का इंतजार कर रहा हूँ।
5	दिशा - तरफ	चारों दिशाओं में भगवान विराजमान है।
	दशा - हालत	सुमित की दशा कुछ ठीक नहीं।
6	कर्म - कार्य	गीता में लिखा है अपना कर्म करना चाहिए।
	क्रम - सिलसिला	अब सब को क्रम से अपना कार्य करना चाहिए।
7	कड़ाई - सख्ती	कड़ाई से सेना में नियमों का पालन कराया जाता हैं।

	कढ़ाई - बेलबूटे काडना	प्रभा बहुत अच्छी <u>कढ़ाई</u> करती है।
8	कृति - रचना	तुम्हारी बनाई <u>कृति</u> अनुपम है।
	कृती - परिश्रमी/प्रवीण	तुम बहुत <u>कृती</u> व्यक्ति हो।
9	गज - हाथी	<u>गज</u> की चाल बहुत धीमी होती है।
	गाज - बिजली	उस पर वक्त <u>गाज़</u> गिर पड़ी।
10	गुर - उपाय	तुम्हें जादूगरी के और <u>गुर</u> सीखने चाहिए।
	गुरु - अध्यापक	हमारे <u>गुरु</u> का नाम प्रभात कुमार है।
11	चर - सेवक	मेरा <u>च</u>र आलसी है।
	चार - 4 संख्या	तुम्हारें <u>चार</u> रुपए मेरे पास हैं।
12	दमन - दबाना	अंग्रेज़ों ने भारतीयों का <u>दमन</u> किया था।
	दामन - पल्ला	रमेश अपनी माँ का <u>दामन</u> नहीं छोड़ता।

13	दवा - दवाई	खाँसी की दवा ले आना।
	दावा - कब्जा	रघु ने रमेश पर धोखाधड़ी करने का दावा कर दिया।
14	द्वार - दरवाज़ा	द्वार पर कोई खड़ा है।
	द्वारा - के माध्यम से	मेरे द्वारा ये लाया गया।
15	चरण - पैर	तुम्हारे चरण छूने हैं।
	चारण - भाट	शहर में चारण आए हुए हैं।

वाक्यांश के लिए शब्द/अनेक शब्दों के लिए एक शब्द:-

हिंदी में अनेक शब्दों, वाक्यांशो या पदबंधो के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। इससे लेखन में संक्षिप्तता आती है -

1 जिसका आकार न हो

2 जो देखने योग्य हो

3 जहाँ जाना कठिन हो

4 जो आसानी से मिल सके

5 जो कठिनाई से प्राप्त हो

6 जिसे क्षमा न किया जा सके

7 जो तप करने वाला हो

8 ईश्वर में विश्वास न करने वाला

9 रात में विचरने (घूमने) वाला

10 जिसका आदि न हो

11 जो सब जगह स्थित (व्याप्त हो)

12 जानने की इच्छा रखने वाला

13 भाषण देने वाला

14 भाषण सुनने वाला

15 वर्ष में एक बार होने वाला

16 प्रतिदिन होने वाला

17 जो किसी विषय की विशेष जानकारी रखता हो

18 जिसे करना आवश्यक हो

<u>शुद्ध वर्तनी</u>:-

कई बार हम जो शब्द बोलते है, उनको गलत प्रकार से लिख देता हैं जिसके कारण पढ़ने वाले को अटपटा-सा प्रतीत होता है। यह वर्तनीगत अशुद्धि होती है;

जैसे - <u>राजसमा</u> का सीधा प्रसारण प्रात 9 बजे।

यहाँ सभा को गलती से समा लिख दिया गया है, इसे अशुद्ध वर्तनी कहा जाता है। जबकि इसका शुद्ध वर्तनी राजसभा है।

कुछ अन्य अशुद्धि रुप इस प्रकार है -

	अशुद्ध	**शुद्ध**
1	शाशन	शासन
2	झूट	झूठ
3	मिष्टान्न	मिष्ठान्न

4	सीधा-साधा	सीधा-सादा
5	मूरति	मूर्ति
6	बनस्पति	वनस्पति
7	जजमान	यजमान
8	कलस	कलश
9	पक्तिं	पंक्ति
10	आशचर्य	आश्चर्य
11	दंपत्ति	दंपती
12	छेत्र	क्षेत्र
13	विशय	विषय
14	बुढ़ा	बूढ़ा

15	परिक्षा	परीक्षा
16	जोग्य	योग्य
17	धोका	धोखा
18	नास	नाश
19	पूर्ब	पूर्व
20	ब्रत	व्रत
21	धंदा	धंधा
22	प्रनाम	प्रणाम
23	बिमारी	बीमारी
24	गुरू	गुरु
25	वधु	वधू